पद १३३

(राग: पूरिया जिल्हा - ताल: धुमाळी)

संतान्याय नीती खाणीं। ऐका ऐका दीनवानीं।।धू.।। जळे दु:खेना आकाश। दावि खेळ भूतविलास।।१।। वीज, वारा, पाणी, फेस। मेघ, छाया लोपवि दिवस।।२।। विकार झाला आत्मतेजीं। होती जाती सहजासहजीं।।३।। आत्मरूपां विटाळ नाहीं। सर्वभोगीं असंग (अलिप्त) पाहीं।।४॥ उच्चनीच जन्मनाश। एक चिन्मार्तांड प्रकाश।।५॥